IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 11, S.Iss 04, 2022

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी संघर्ष

अर्चना शर्मा, शोद्यार्थी, हिन्दी विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर
डॉ0 ज्योति यादव, शोध निर्देषिका, हिन्दी विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

परिचयात्मक शोध की भूमिका

साहित्य समाज का दर्पण है, चूँकि साहित्यकारों की उत्पत्ति और निर्माण समाज से ही होता है। समाज में घटित हो रही घटनाओं को साहित्यकार हु–ब–हु चित्रित करता हैं। हिन्दी साहित्य जगत् में कितने ही साहित्यकार, अपनी कलम के सिपाही बनकर सेवारत रहे हैं जो साहित्य के माध्यम से समाज में उठनेवाले प्रश्नों को वाणी प्रदान करते हैं। बीसवीं शती के उत्तरार्द्ध के हिन्दी उपन्यासों में नारी सशक्तीकरण या नारी विषयक, नारी–विमर्श को प्रश्रय देनेवालें उपन्यासों का सृजन हुआ हैं। ऐसे ही नारी विषयक समस्याओं को लेकर कलम चलानेवाली नारीवादी सशक्त लेखिका मैत्रेयी पुष्पा हैं। इन्होंने अपने निजी अनुभवों और अपनी जीवनयात्रा में घटित हुई घटनाओं को साहित्य में उतारा हैं। मैत्रेयी पुष्पा ने नारी जीवन की नाना प्रकार की समस्याओं और मनोद्वन्द्वों को विश्लेषित करने का कठिन कार्य किया है। मैत्रेयी पुष्पा के समग्र साहित्य में नारी जीवन के दुरूह, यातना, पीड़ा और घुटन का चित्रण हुआ है। इस प्रकार मैत्रेयी नारी–संघर्ष के क्षेत्र में सशक्त लेखिका के रूप में साहित्य जगत् में दिखाई देती है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में बीसवीं शदी के उतरार्द्ध में महिला लेखिकाओं में, मैत्रेयी पुष्पा का नाम आदर एवम् सम्मान के साथ लिया जाता है। पुष्पाजी का संपूर्ण साहित्य नारी–विषयक रहा है।

शुरू से लेकर आजतक के हिन्दी उपन्यासों ने अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है। उसमें सामाजिक जीवन के विविध पहलुओं, विविध रूपों, विभिन्न स्तरों पर प्रकाश डाला और मनुष्य की आशा–आकांक्षा, दुःख–निराशा, कर्त्तव्य और आदर्श का अधिकाधिक यथार्थ विवेचन पाया जाता है। पिछली शती में उपदेश कथाओं के रूप में आरंभ हुई हिन्दी की औपन्यासिक परंपरा प्रेमचन्द के आदर्शोन्मुख यथार्थवाद को पार करती हुई, सामाजिक यथार्थ के निकट पहुँच गयी है। वर्णन, घटना, समाज, व्यक्ति और मन के पड़ावों से होता हुआ हिन्दी उपन्यास निरंतर मंजिल की ओर अग्रसर है।

उपन्यास यथार्थ परिवेश में मानव जीवन की अभिव्यक्ति बनकर मनुष्य की आंतरिकता का अन्वेषण करके, मानवता की प्रतिष्ठा तथा मानव मूल्य की मर्यादा निश्चित करता है। विशेषकर नारी और समाज का अन्योन्याश्रित सबंध रहा है। समग्र मानव जीवन की अनमोल निधि के रूप में नारी को स्थापित किया गया है। नारी समाज की मुख्य धरोहर है क्योंकि नारी पात्र के बिना समाज की कल्पना करना असंभव है। नारी के सामाजिक मूल्यों की परख समाज और साहित्य के पल–पल परिवर्तित परिवेशों में ही हो सकती है। उपन्यास में जीवन का समग्र चित्रांकन होने के कारण नारी के विविध पारिवारिक एवं सामाजिक रूपों का सम्यक चित्रण मिलता है। आधुनिकयुग की नारियाँ अब परम्परागत निषेधों में बँधकर जीवन यापन करना कदापि पसंद नहीं करती हैं। फलस्वरूप विभिन्न परम्पराओं और सम्बन्धों के बीच में तादात्म्य स्थापित करने में असफल होती है। परिणामतया विविध शोषण का शिकार बनकर रह जाती है। उनकी पीडा, कुण्ठा, दुःख–दर्द और त्रासदी की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम उपन्यास ही है। हिन्दी उपन्यासों में नारी के माता, पत्नी, प्रेयसी, बहन आदि अनिवार्य रूपों को नारी प्राचीनतम सोच एवं व्यवहार में ढालने के बजाय आधुनिक परिवेश की परिपाटी पर चलने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध–कार्य में मैंने नारी के विविधरूप, उनकी विशेषताएँ, नारी जीवन में उठनेवाली समस्याएँ आदि का विश्लेषण मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों के सन्दर्भ में करने का प्रयास किया हैं।

परिचयात्मक शोध के सोपान

अपने अस्तित्व को बचाने में नारी ने विभिन्न परिस्थितियों में हमेशा ही अनेक समस्याओं का सामना किया है। अन्य महिला लेखिकाओं मे मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों में नारी संघर्ष, द्वन्द्व व उसकी पीड़ा को विभिन्न रूपों में प्रस्तुत किया है। इसीलिए मैने मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों मे नारी संघर्ष को चुना व शोध कार्य आरम्भ किया। हिन्दी उपन्यास साहित्य नारी के विभिन्न रूपों, समस्याओं और धारणाओं को आधार बनाता रहा है। इस सत्य को सरल ढंग से विश्लेषित करने का प्रयास मेरे द्वारा किया गया है। पुष्पाजी का सृजन क्षेत्र विशेषतः नारी विषयक ही रहा है। जिनमें मध्यम वर्ग एवं निम्नवर्ग की नारी की समस्याओं का चित्रण देखने को मिलता है।

परिचयात्मक शोध का महत्त्व

विश्व एक गाँव बन चुका है। ऐसे समय में नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोण बदल गया हैं, कहीं कम, तो कहीं ज्यादा। आधुनिक युग में नारी शिक्षा, फैशन और पाश्चात्य प्रभाव से नारी चेतना उभरी है। शहरी नारी और ग्रामीण अंचलों की नारी का तुलनात्मक रूप मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों का मूल स्वर रहा है। पुष्पाजी ने समाज के सामने प्रश्न उठाया है कि क्या नारी सिर्फ शरीर है?

पुष्पाजी के नारी चरित्र परंपरागत सोच की आधारशिला नहीं बनते अपितु परंपरा के कंधे पर बन्दूक रखते हुए, आधुनिक समय प्रवाह में विलीन होते हैं। अतः इस शोध–कार्य के माध्यम से आज के पुरूष प्रधान समाज में नारी–संघर्ष को दिशा मिल सकती है। आज की घोर व्यावसायिक जिन्दगी में उपभोगवादी व्यवस्था का शीर्ष पुरूष क्या सचमुच नारी को मुक्त देखना चाहता है? क्या नारी की ऐसी कोई शारीरिक मांग नहीं होती जिसकी पूर्ति वह स्वयं नहीं कर सकती? आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त नारी का शारीरिक शोषण के साथ समझौता नहीं होता? क्या नारी पुरूषों की अनुज ही बन सकती है? क्या नारी पुरुषों की अग्रज नहीं बन सकती ? आदि प्रश्नों का उत्तर ढूँढने का प्रयास उक्त शोध–कार्य में मेरे द्वारा किया जा रहा है। मेरे अन्वेषण से नारी संबंधी कई तथ्य उभरें है, जो निस्संदेह हर दृष्टि से परिवार, समाज एवं राष्ट्र के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते है।

परिचयात्मक शोध के उद्देश्य

मैत्रेयीजी ने उपन्यासों के माध्यम से बाड़े में रहनेवाली मजदूर महिलाओं की समस्या और उसकी शारीरिक शोषण की गाथा से उन्हें परिचित करवाया था। वह उनका प्रथम साहसिक कदम था जिसके फलस्वरूप उन्हें अनेक मुश्किलों का सामना करना पड़ा किन्तु इस बात की उन्हें संतुष्टि थी कि उन्होंने बाड़े की महिलाओं के प्रश्नों को एक नई दिशा प्रदान की थी।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 11, S.Iss 04, 2022

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास अपने सरोकारों में नारी संवेदना और यर्थाथ की दिशा में महत्वपूर्ण आयाम खोले है लेखिका ने नारी चरित्र के अन्तःवास रूप का मानवीय जीवन के आलोक में मानवोचित यथार्थ के धरातल पर परखा है।

परिचयात्मक शोध का निष्कर्ष

हिन्दी साहित्य की परिपाटी को देखे तो बीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में जिन महिला लेखिकाओं की एक प्रकार की बाढ़ आयी थी। उसमें पुष्पाजी एक सशक्त महिला लेखिका है जो अपनी उत्कृष्ट प्रतिभा का परिचय देती हैं। अतः 'स्त्री–विमर्श' की सदाबहार लेखिका के रूप प्रस्थापित होती है। मैत्रेयी पुष्पाजी ने साहित्य के माध्यम से बुन्देलखण्ड और आसपास के अंचल–विशेष को केन्द्र में रखकर नारीजीवन का खरा यथार्थ प्रस्तुत किया है, साथ ही, आधुनिक युग में आजभी गाँवों में नारी की हीन दशा को एवम् उनकी समस्याओं को प्रस्तुत करने का कठिन परिश्रम भी किया है। अगर यूँ कहे कि पुष्पाजी ने अपने साहित्य को साधन बनाकर 'नारी–विमर्श'को नयी चेतना प्रदान की है, तो गलत न होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. डॉ. विष्णुदत्त शर्मा : नारी और न्याय
2. सं. डॉ. राजकुमार : नारी शोषण समस्याएँ एवं समाधान
3. डॉ. श्रीमती मुकुलरानीसिंह : प्रसाद के नाटकों के नारी पात्र
4. डॉ. क्षितिज यादवराव धुमाळ :बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिन्दी उपन्यासों का प्रवृतिमूलक अनुशीलन
5. डॉ. सुमंगला झा : मनुस्मृति में नारी
6. भरत वी. भेडा :मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारीपात्र (लघुशोध–प्रबंध– एम.फिल.)